म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

सा विद्या या विमुक्तये

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

TESS India

भाषा और साक्षरता

स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना

भारत में विद्यालय समर्थित
शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

The Open University

UKaid from the British people

एस.आर.मोहन्ती
अपर मुख्य सचिव

अ.शा.पत्र क्र R.S.K/10
दूरभाष कार्यालय - 0755-4251330
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल-462 004
भोपाल, दिनांक 20-1-2016

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

बच्चों की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और रोचक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयासरत् है। आप सभी के प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में भी निखार आया है और शालाओं में कक्षा शिक्षण भी आंनददायी तथा बेहतर हुआ है।

इसी दिशा में शिक्षकों को बाल केन्द्रित शिक्षण की ओर उन्मुख करने और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को लेकर, TESS India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) का विकास किया गया हैं। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता व सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। आशा है कि ये संसाधन, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और क्षमतावर्द्धन में लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में TESS India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया हैं। आशा है इन संसाधनों के उपयोग से प्रदेश के शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित होंगे और कक्षाओं में पठन पाठन को रूचिकर और गुणवत्तायुक्त बनाने में मदद मिलेगी।
शुभकामनाओं सहित,

(एस.आर.मोहन्ती)

दीप्ति गौड मुकर्जी
आयुक्त
राज्य शिक्षा केन्द्र एवं
सचिव
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शा. पत्र क्र. : 8
दिनांक : 12-1-16
पुस्तक भवन, वी-विंग
अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
फोन : (का.) 2768392
फैक्स : (0755) 2552363
वेवसाइट : www.educationportal.mp.gov.in
ई-मेल : rskcommmp@nic.in

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

सभी बच्चों को रूचिकर और बाल केन्द्रित शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षकों को शिक्षण की नवीनतम तकनीकों और शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए साथ ही इन तकनीकों के उपयोग के लिए उन्हे प्रोत्साहित भी किया जाए। TESS India द्वारा तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) के उपयोग से शिक्षक शिक्षण प्रविधि के व्यावहारिक उपयोग को सीख सकते हैं। इनकी सहायता से शिक्षक न केवल विषय वस्तु को सुगमता पूर्वक पढ़ा सकते हैं बल्कि पठन पाठन की इस प्रकिया में बच्चों की अधिक से अधिक सहभागिता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

राज्य शिक्षा केन्द्र स्कूल शिक्षा विभाग ने स्थानीय भाषा में तैयार किये गये इन मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को अपने पोर्टल www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया है।

आशा हैं, कि आप इन संसाधनों का कक्षा शिक्षण के दौरान नियमित रूप से उपयोग करेंगे और अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हुए बच्चों की पढ़ाई को आनंददायक बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(दीप्ति गौड़ मुकर्जी)

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

टेस–इण्डिया स्थानीयकृत ओईआर निर्माण में सहयोग

मार्गदर्शन एवं समीक्षा :
श्रीमती स्वाति मीणा नायक, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एच. के. सेनापति, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. ओ.पी.शर्मा, अपर संचालक, मध्यप्रदेश एससीईआरटी
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
प्रो.जयदीप मंडल, विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं गणित शिक्षा संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आर. रायजादा, सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विस्तार शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. वी.जी. जाधव, से.नि. प्राध्यापक भौतिक, एनसीईआरटी
डॉ. के. बी. सुब्रमण्यम से.नि. प्राध्यापक गणित, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आई. पी. अग्रवाल से.नि. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. अश्विनी गर्ग सहा. प्राध्यापक गणित संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. एल. के. तिवारी, सहप्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री एल.एस.चौहान, सहा. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. श्रुति त्रिपाठी, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. रजनी थपलियाल, व्याख्याता अंग्रेजी, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. मधु जैन, व्याख्याता शास. उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
डॉ. सुशोवन बनिक, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. सौरभ कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री. अजी थॉमस, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. राजीव कुमार जैन, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
स्थानीयकरण :
भाषा एवं साक्षरता
डॉ. लोकेश खरे, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एम.एल. उपाध्याय से.नि. व्याख्याता शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय मुरैना
श्री रामगोपाल रायकवार ,कनि. व्याख्याता, डाइट कुण्डेश्वर, टीकमगढ़
डॉ. दीपक जैन अध्यापक, शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय क्र 1 टीकमगढ़
अंग्रेजी
श्री राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्रीमती कमलेश शर्मा. डायरेक्टर , ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री हेमंत शर्मा, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री मनोज कुमार गुहा वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी. मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एफ.एस.खान, वरि.व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई) भोपाल
श्री सुदीप दास, प्राचार्य, शास.उ.मा.विद्यालय दालौदा, मन्दसौर
श्रीमती संगीता सक्सेना, व्याख्याता, ,शास.कस्तूरबा कन्या उ.मा.विद्यालय भोपाल
गणित
श्री बी.बी. पी. गुप्ता, समन्वयक गणित, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ए. एच. खान प्राचार्य शास.उ.मा.विद्यालय रामाकोना, छिंदवाड़ा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्त , प्राचार्य शास. जीवाजी ऑब्जर्वेटरी उज्जैन
डॉ.आर,सी. उपाध्याय, वरि. व्याख्याता, डाइट, सतना
डॉ. सीमा जैन, व्याख्याता, शास. कन्या उ.मा.विद्यालय गोविन्दपुरा, भोपाल
श्री सुशील कुमार शर्मा, शिक्षक, शास. लक्ष्मी मंडी उ.मा.विद्यालय, अशोका गार्डन, भोपाल
विज्ञान
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
डॉ. सुसम्मा जॉनसन, व्याख्याता एस.आई.एस.ई. जबलपुर मध्यप्रदेश
डॉ.सुबोध सक्सैना, समन्वयक एससीईआरटी मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री अरूण भार्गव, वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्रीमती सुषमा भट्ट, वरि.व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ब्रजेश सक्सेना, प्राचार्य, एससीईआरटी ,मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. रेहाना सिद्दकी से.नि. व्याख्याता सेन्ट फ्रांसिस हा. से. स्कूल भोपाल

*TESS-India (*विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा*)* का उद्देश्य मुक्त शैक्षिक संसाधनों की सहायता से भारत में प्रारंभिक और सेकेण्डरी शिक्षकों के कक्षा अभ्यास व कक्षा निष्पादन को सुधारना है जिसमें वे इन संसाधनों की सहायता से विद्यार्थी-केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोणों का विकास कर सकें। टेस इंडिया के मुक्त शैक्षिक संसाधन शिक्षकों के लिए स्कूल पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त,सहयोगी पुस्तिका या संसाधन की तरह हैं। इसमें शिक्षकों के लिए कुछ गतिविधियां दी गई हैं जिन्हे वे कक्षाओ में विद्यार्थियों के साथ प्रयोग में ला सकते हैं, इसके साथ साथ कुछ केस स्टडी दी गई हैं जो यह बताती हैं कि कैसे अन्य शिक्षकों ने पाठ्य विषय को कक्षाओं में पढ़ाया और अपनी विषय संबंधी जानकारियों को बढ़ाने तथा पाठ योजनाओं को तैयार करने में संसाधनों का उपयोग किया।

TESS-India OER भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किये गये है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट रूप में उपयोग के लिए उपलब्ध हैं *(http://www.tess-india.edu.in)*। *OER* कार्यक्रम से जुड़े प्रत्येक भारतीय राज्य के शिक्षकों के उपयोग के लिए उपयुक्त तथा कई संस्करणों में उपलब्ध हैं तथा शिक्षक व उपयोगकर्ता इन्हे अपनी स्थानीय आवश्यकताओं और सन्दर्भो के अनुरूप इनका स्थानीय करण करके उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तुत संस्करण मध्यप्रदेश की स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भो को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई में कुछ गतिविधियों के साथ यह आइकॉन (संकेत) दिया गया है*:* *.* इसका अर्थ है कि आप उक्त विशिष्ट विषयवस्तु या शैक्षणिक प्रविधि को और अधिक समझने के लिए *TESS-India* के वीडियो संसाधनों की मदद ले सकते हैं।

TESS-India वीडियो ससांधन (Resources) भारतीय परिप्रेक्ष्य में कक्षाओं में उपयोग की जा सकने वाली सीखने–सिखाने की विविध तकनीकों को दर्शाते हैं। हमें यकीन है कि इनसे आपको इसी प्रकार की तकनीकें अपनी कक्षा में करने में मदद मिलेगी। यदि इन वीडियो संसाधनों तक आपकी पहुँच नहीं हो तो कोई बात नहीं। यह वीडियो पाठ्यपुस्तक का स्थान नहीं लेते, बल्कि उसको पढ़ाने में आपकी मदद करते हैं।

TESS-India के वीडियो संसाधनों को *TESS-India* की वेबसाइट *http://www.tess-india.edu.in/* पर ऑनलाइन देखा जा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आप इन वीडियो को सीडी या मेमोरी कार्ड में लेकर भी देख सकते हैं।

संस्करण *2.0 LL10v1*
Madhya Pradesh

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

इस इकाई में आप भाषा और साक्षरता की कक्षा में पाठ्यपुस्तक के पूरक के रूप में आसानी से उपलब्ध स्थानीय संसाधनों के उपयोग को जानने का प्रयास करेंगे। चाहे उसमें परिवेश पर लिखना, समुदाय के सदस्यों को सुनना और उनसे बातचीत करना शामिल हो, या चर्चा के लिए एक संकेत के रूप में विशेष़ क्षेत्र का उपयोग करना हो, ऐसे संसाधनों का लाभ यह है कि वे प्रामाणिक भाषा के प्रयोग का प्रतिनिधित्व और उसे उत्पन्न करते हैं।

आप इस इकाई से क्या सीख सकते हैं

- भाषा जागरूकता संबंधी गतिविधियों के आधार के रूप में निःशुल्क उपलब्ध प्रिंट-आधारित सामग्री का उपयोग कैसे किया जाए।
- कक्षा में पधारने वाले अतिथि के इर्द-गिर्द किस प्रकार पाठों की श्रृंखला की योजना तैयार की जाए।
- किस प्रकार आपके विद्यार्थियों की भाषा और साक्षरता कौशल को विकसित करने के लिए उनकी स्कूल की यात्रा को एक संसाधन के रूप में उपयोग किया जाए।

यह तरीका क्यों महत्वपूर्ण है

विद्यार्थी उस समय सबसे अच्छा सीखते हैं, जब वे अपने दैनिक जीवन से संबंधित व्यावहारिक, उद्देश्यपूर्ण गतिविधियों में संलग्न हों। वे कक्षा के अंदर और बाहर, दोनों जगह, उनके विवेक और जिज्ञासा को आकर्षित करने वाले विभिन्न उत्तेजनाओं पर अच्छी तरह प्रतिक्रिया करते हैं। स्कूल की पाठ्यपुस्तक इस प्रकार विस्तृत शैक्षिक अवसरों की पेशकश नहीं कर सकती है, इसलिए उसे अतिरिक्त अनुपूरक गतिविधियों से पूरा करना महत्वपूर्ण है। यह इकाई दर्शाता है कि स्थानीय परिवेश में उपलब्ध प्रामाणिक संसाधनों की आपूर्ति से ग्रहण करते हुए किस प्रकार ऐसा किया जा सकता है।

संसाधन 1, 'स्थानीय संसाधनों का उपयोग' पढ़ते हुए शुरुआत करें।

वीडियो: स्थानीय संसाधनों का उपयोग

1 प्रिंट-आधारित स्थानीय संसाधन

आप अपनी भाषा की कक्षा में सुधार के लिए प्रिंट-आधारित स्थानीय संसाधनों के उपयोग के तरीक़ों पर विचार करते हुए इसकी शुरुआत करेंगे।

केस स्टडी 1: भाषा और साक्षरता कक्षा में खाद्य सामग्री की पैकेजिंग का उपयोग

मध्यप्रदेश की एक माध्यमिक शाला के शिक्षक श्री देव बताते हैं कि वे अपनी छठी कक्षा के विद्यार्थियों के बीच भाषा के बारे में जागरूकता विकसित करने के लिए किस प्रकार खाद्य सामग्री की पैकेजिंग का उपयोग करते हैं।

पाठ्यपुस्तकों के अलावा, मेरी कक्षा में मेरे पास बहुत कम संसाधन हैं। पिछले वर्ष मैंने महसूस किया कि खाद्य पदार्थों के डिब्बों, पैकेटों पर लिखे नारे, सामग्रियों की सूची और निर्देश भी भाषा-आधारित गतिविधियों में काम आ सकते हैं।

इसलिए मैंने ख़ाली, साफ़ पैकेट कार्टन तथा कैन एकत्रित करना शुरू किया, और मेरे रिश्तेदार एवं पड़ोसियों से भी मेरे लिए उन्हें सँभाल कर रखने को कहा। कई सचित्र पैकेट रंगीन शब्दों, वाक्यांशों और चित्रों से सुसज्जित थे । (शिक्षक स्थानीय स्तर से बिस्कुट, चॉकलेट तेल, मसाले आदि खाली पैकेट एकत्र कर सकते हैं।) मैं कक्षा में पैकेटों को ले आया और अपने विद्यार्थियों को दिखाने के लिए उनमें से एक का चयन किया। यह एक मैंगो ड्रिंक का कार्टन था। मेरे कई विद्यार्थियों ने उसे पहचान लिया, क्योंकि वे स्वयं उसे पीते थे।

मैंने विद्यार्थियों से पूछा कि उनके विचार में उसमें कौन-सी सामग्रियाँ शामिल थीं। मैंने एक सहकर्मी को सामग्रियों को ज़ोर से पढ़ कर सुनाने के लिए बुलाया: 'पानी, आम, चीनी, कृत्रिम सुगंध, परिरक्षक'। मैंने एक और विद्यार्थी से सामने छपे नारे को पढ़ कर सुनाने के लिए कहा, 'अच्छे स्वास्थ्य के लिए'। हमने सामग्रियों पर चर्चा की और विचार किया कि क्या वे स्वास्थ्य के लिए उतने ही लाभदायक हैं जितना कि नारे में दावा किया गया है।

हमने कार्टन पर मौजूद अन्य लेखन पर भी नज़र डाली। एक निर्देश मौजूद था कि ड्रिंक को ठंडा परोसा जाए, और अनुरोध किया गया था कि कार्टन को सावधानीपूर्वक नष्ट किया जाए। मैंने मुख्य शब्द और वाक्यांश ब्लैक बोर्ड पर लिखे।

इसके बाद, मैंने अपने विद्यार्थियों से पूछा कि क्या उन्हें याद है कि विशेषण क्या है? श्यामपट पर लिखे शब्दों में से, मैंने उन्हें विशेषण के कुछ उदाहरणों को पहचानने में मदद की (जैसे कि 'अच्छा', 'कृत्रिम' और 'ठंडा')। मैंने अपनी कक्षा में मौजूद स्थानीय/अन्य भाषा बोलने वालों से पूछा कि वे अपनी मातृभाषा में इन विशेषणों को क्या कहते हैं।

इसके बाद मैंने अपने विद्यार्थियों को तीन या चार के समूहों में व्यवस्थित किया और उन्हें दिए गए पैकेट या कार्टन का परीक्षण करने, तथा मुख्य शब्दों और वाक्यांशों को लिख लेने, उनके अर्थ पर चर्चा करने, एवं उनमें से किन्हीं विशेषणों को पहचानने के लिए कहा।

हमने पूरी कक्षा के साथ फ़ीडबैक सत्र समाप्त किया, जिसमें प्रत्येक समूह ने उन्हें सौंपे गए पैकेजिंग में मौजूद विशेषणों को ज़ोर से सुनाया। मैंने श्यामपट पर इन्हें सूचीबद्ध किया, ताकि हर कोई इसे लिख ले। एक या दो उदाहरण, जो वस्तुतः विशेषण नहीं थे, उन्हें स्पष्ट करने में मदद की।

उसके बाद समूहों के बीच पैकेजिंग के पुनर्वितरण के साथ इस गतिविधि को दोहराया। लेकिन, एक अवसर पर मैंने अपने विद्यार्थियों को क्रिया पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहा, और दूसरे अवसर पर संज्ञा पर। प्रत्येक मामले में, मैंने विद्यार्थी समूहों को उन्हें आबंटित पैकेटों पर उदाहरण ढूँढ़ने से पहले, मैंगो ड्रिंक पैकेजिंग से इन शब्द स्वरूपों के उदाहरण पूछना शुरू किया।

फ़ीडबैक सत्र विद्यार्थियों की भाषा संबंधी अवधारणा को स्पष्ट करने में बहुत ही रोचक साबित हुआ। उदाहरण के लिए, क्रिया के मामले में, हमने देखा कि इन्होंने अक्सर आज्ञार्थक स्वरूप ग्रहण किया (जैसे कि 'परोसें' और 'निपटाएँ')। संज्ञा के मामले में, हमने देखा कि कुछ एकवचन थे ('कार्टन'), कुछ बहुवचन ('सामग्रियाँ'), कुछ ठोस और मूर्त ('चीनी' या 'पानी') थे, और कुछ अमूर्त ('स्वास्थ्य')।

अब भी, मेरे विद्यार्थी कभी-कभी उन्हें घर पर मौजूद खादय सामग्री कें पैकेटों पर मिलने वाले विशेषण, क्रिया या संज्ञा के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

विचार कीजिए

- श्री देव की गतिविधि में भाषा शिक्षण के कौन-से अवसर शामिल थे?
- आप इसे अपने विद्यार्थियों के अनुकूल किस प्रकार परिवर्तित या विस्तृत कर सकते हैं?
- अन्य किस प्रकार के प्रिंट-आधारित संसाधन ऐसी गतिविधि में सहायक हो सकते हैं?

इस गतिविधि में, विद्यार्थियों ने खादय सामग्री के डिब्बों/पैकेटों पर सामग्रियों के रूप में सूचीबद्ध शब्दों (अर्थात संज्ञा) और उन पर मौजूद वर्णनात्मक शब्दों (अर्थात विशेषण) के बारे में बात की। आप अपने विद्यार्थियों से उनके पसंदीदा खाद्य-पदार्थ के लिए स्वयं अपने व्यंजन विधि या नारे लिखने के लिए कह सकते हैं। इस प्रकार की गतिविधियों के लिए ऐसे कई अन्य संसाधन हैं, जिनका आप उपयोग कर सकते हैं – उदाहरण के लिए बसो के टाइम टेबिल, सिनेमा टिकट, या पत्रिका में प्रकाशित विज्ञापन।

गतिविधि 1: अपने विद्यार्थियों के साथ प्रिंट-आधारित संसाधनों का उपयोग
आप अपनी हिन्दी पाठ्यपुस्तक में जिस विषय को पढ़ाने जा रहे हैं, उसके भाषा पहलूओं पर पहले से नज़र डालें। विचार करें कि आप किस प्रकार स्थानीय परिवेश में मौजूद प्रिंट-आधारित संसाधनों से ग्रहण करते हुए इसकी पूर्ति कर सकते हैं। अपने विद्यार्थियों के लिए उसकी उपयुक्तता और उन्हें एकत्रित करने की आसानी पर विचार करें। उदाहरण के लिए, खाद्य सामग्री के पैकटों के विकल्पों में शामिल हैं पत्रिकाएँ, उत्पाद और प्रक्रियाओं के लिए निर्देश और स्थानीय कार्यक्रम की घोषणा करने वाले सूचना-पत्र। विद्यार्थियों के समूहों में वितरित करने के लिए पर्याप्त मात्रा में नमूने एकत्रित करें। यह सुनिश्चित करने के लिए सामग्री की जाँच करें कि उसमें भाषा संबंधी उपयुक्त उदाहरण मौजूद हैं, जिन पर आप ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं। समय-सीमा के साथ, अपने पाठ के विभिन्न भागों को रेखांकित करें। ध्यान रहे कि आपको बाद में किसी दिन विस्तार गतिविधियाँ संचालित करने की ज़रूरत पड़ सकती है।

विचार कीजिए

इस गतिविधि को प्रयोग करने के बाद, विचार करें कि

- पाठ में किस प्रकार का भाषा शिक्षण हासिल किया गया?

- आप किस हद तक अपने विद्यार्थियों के बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने के कौशल पर निगरानी रखने और उसका आकलन करने में सक्षम रहे?

2 बातचीत पर आधारित स्थानीय संसाधन

आपका स्थानीय परिवेश भी आपको बातचीत पर आधारित संसाधनों की पेशकश करता है, जो आपके विद्यार्थियों के शिक्षण में योगदान दे सकते हैं।

केस स्टडी 2: एक कपास बुनकर का भ्रमण

सुश्री हिना, मध्यप्रदेश की एक प्राथमिक शिक्षिका हैं वे एक अतिथि वक्ता के भ्रमण का वर्णन करती है, जो उन्होंने अपनी चौथी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए आयोजित किया था।

पाठ्यपुस्तक के जिन अध्यायों को हम पढ़ा रहे थे, उनमें से एक कपास उगाने के विषय पर था। हमारे गाँव में बुनाई और छपाई करने वाले कारीगरों का समूह है। मैंने सोचा कि कक्षा में हमारे विद्यार्थियों के समक्ष अपनी कला के बारे में बातचीत करने के लिए उनमें से एक को आमंत्रित करना दिलचस्प हो सकता है।

एक दिन, स्कूल के बाद, मैं उस समूह के पास गई और उनके प्रधान बुनकर, श्री अरुण से अपने विचार पर चर्चा की [चित्र 2]। उन्होंने सहर्ष निमंत्रण स्वीकार किया। मैंने उन्हें अपने विद्यार्थियों की उम्र बताते हुए, उन चीज़ों के बारे में बताया, जिनमें उनकी दिलचस्पी हो सकती है। मैंने सुझाव दिया कि वे अपने साथ कपड़ों के विभिन्न नमूने, विभिन्न रंग के रंजक या डाई, और शटल जैसे कुछ छोटे करघा-संबंधित चीज़ें ले आएँ, ताकि भाषण के दौरान वे उन्हें प्रदर्शित कर सकें।

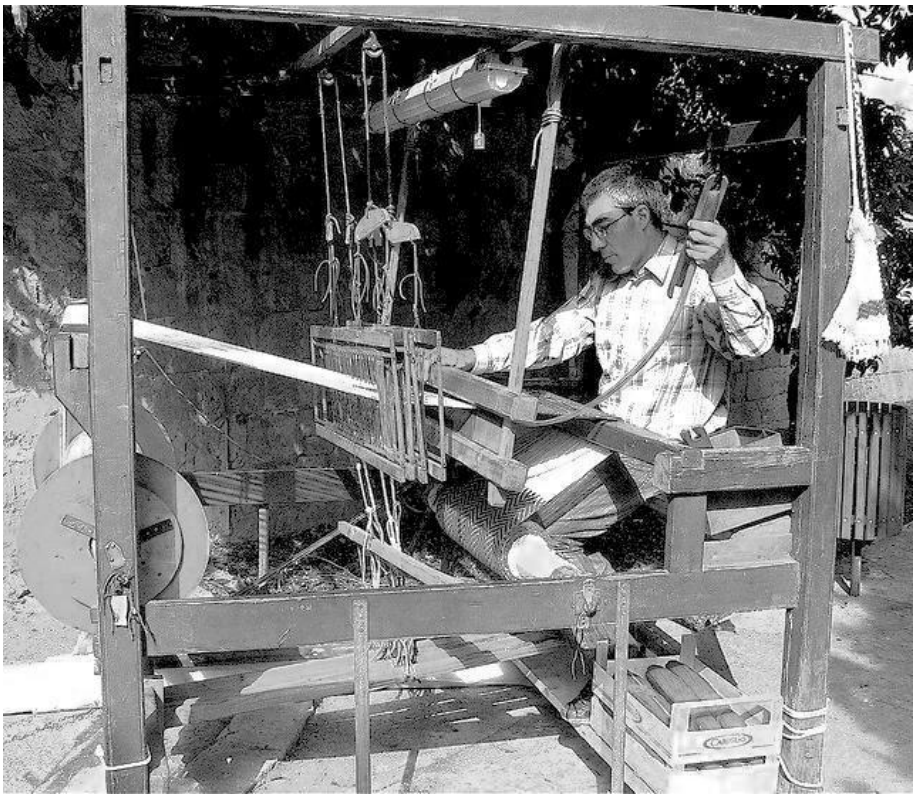

चित्र 2 एक बुनकर।

फिर मैंने अपने विद्यार्थियों को श्री अरुण के आगामी भ्रमण के बारे में सूचित किया। वे बहुत उत्साहित थे। उस भ्रमण की तैयारी के लिए, मैंने अपने विद्यार्थियों को चार के समूहों में व्यवस्थित किया और उन्हें श्री अरुण से उनके कार्य के बारे में पूछे जाने वाले कोई दो प्रश्न सोचने और अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखने को कहा। मैंने देखा कि मेरे विद्यार्थी इस गतिविधि के दौरान बहुत बातूनी हो गए थे। यह चर्चा प्रश्नों पर सहमति तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें प्रश्नों को अच्छी तरह लिखने पर विचार-विमर्श भी शामिल था।

जब उनका यह काम ख़त्म हुआ, तो मैंने समूहों से किसी एक ऐसे सदस्य को नामांकित करने के लिए कहा, जो बाक़ी कक्षा के साथ अपने प्रस्तावित प्रश्नों को साझा करेगा। स्वयं उन प्रश्नों को श्यामपटट पर लिखने के बजाय, मैंने उनसे पूछा कि क्या कोई यह काम करना चाहेगा।

कई लोगों ने लिखने की पेशकश की!
मैं अपने भावी पाठों में इस कार्य को दूसरों द्वारा करवाने के अवसर शामिल करने की कोशिश करूँगी।

फ़ीडबैक सत्र के अंत में, हमारे पास संभावित प्रश्नों की लंबी सूची तैयार थी। साथ मिल कर, हमने एक जैसे प्रश्नों को पहचाना और उन्हें अलग कर दिया तथा शेष आठ को उपयुक्त क्रम में व्यवस्थित किया। अंत में, मैंने अपने विद्यार्थियों को प्रश्नों की अंतिम सूची अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखने को कहा।

मेरे कुछ विद्यार्थी श्री अरुण से प्रश्न करने के लिए काफ़ी उत्सुक थे; और कुछ सवाल करने से हिचकिचा रहे थे। पूर्व से किन्ही विशेष विद्यार्थियों को प्रश्न आबंटित करने के बजाय, मैंने सुझाव दिया कि वे सब तैयारी करके आएँ ओर अगले दिन श्री अरूण से कोई भी प्रश्न करें। मेरे विद्यार्थियों ने उस शाम अपने गृह-कार्य को बहुत ही गंभीरता से लिया।

श्री अरुण का दौरा बेहद सफल साबित हुआ। उन्होंने बुनाई और छपाई के कार्य के परिचय से शुरुआत की, जहाँ वस्त्रों के नमूने दिखाए वहीं मेरे विद्यार्थियों को अपने औजार हाथ में लेने दिया। फिर उन्होंने विद्यार्थियों को प्रश्न करने के लिए आमंत्रित किया – कुछ तो बेहद आश्वस्त थे, और कुछ जो आश्वस्त नहीं थे। क्योंकि उन्होंने अपने परिचयात्मक प्रस्तुति के दौरान ही कुछ प्रत्याशित प्रश्नों का पहले ही जवाब दे दिया था, इसलिए मेरे विद्यार्थियों द्वारा तैयार किए गए कुछ प्रश्न अब उपयुक्त नहीं थे। इसकी जगह एक या दो विद्यार्थियों ने ऐसे सवाल किए, जिनके बारे में पहले सोचा नहीं गया था।

विचार कीजिए

- किस प्रकार का भाषा शिक्षण हासिल किया गया:
  - श्री अरुण के दौरे की तैयारी में?
  - उनके दौरे के समय?
- क्या इससे कोई फ़र्क पड़ा कि विद्यार्थियों द्वारा तैयार किए गए कुछ प्रश्न अब प्रासंगिक नहीं रहे?

स्थानीय और विस्तृत समुदाय में ऐसे कई लोग हैं जिन्हें आप अपने विद्यार्थियों को उनके ज्ञान, कौशल और अनुभव के बारे में चर्चा करने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं – विशेष रूप से ऐसे लोग जो कक्षा में आपके द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषयों से जुड़े हों।

उदाहरण के लिए, स्थानीय सरकार या पुलिस बल के सदस्य, जिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता, आस-पास की दुकानों या बाज़ार के विक्रता,शिल्पी, मैकेनिक, कारीगर, संगीतकार, किसान या रसोइयों को आमंत्रित करने पर विचार करें।

माता-पिता या दादा-दादी भी काफ़ी योगदान दे सकते हैं। अतीत के बारे में उन्हें जो याद है, उसकी चर्चा करते हुए, वे विद्यार्थियों को क्षेत्र के इतिहास और संस्कृति पर बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं।

सुझाव और संपर्कों के लिए अपने साथी शिक्षकों से भी पूछें।

गतिविधि 2: अपनी कक्षा में अतिथि वक्ता को आमंत्रित करना
कक्षा में स्थानीय समुदाय के सदस्य के भ्रमण की योजना तैयार करें। वक्ता को आमंत्रित करने के लिए उनसे व्यक्तिगत रूप से, फ़ोन द्वारा या लिखित रूप में संपर्क करें। अगर वे सहमत हो जाते हैं, तो अपने विद्यार्थियों को दिलचस्प लगने वाली चीज़ों के बारे में अधिक विस्तृत चर्चा सहित इसका अनुवर्तन(फीडबैक) करें। परस्पर सहमति से भ्रमण का दिनांक निश्चित करें। अपने विद्यार्थियों को अतिथि वक्ता द्वारा स्कूल के भ्रमण के बारे में पूर्व जानकारी दें और उन्हें कुछ प्रश्न तैयार करने के लिए समय दें, जिनका वे जवाब जानना चाहेंगे (केस स्टडी 2 देखें) अतिथि वक्ता के भ्रमण के उपयोगी फीडबैक आगे संचालन योग्य गतिविधियों के बारे में सोचे। उदाहरण के लिए, आप किस प्रकार अपने विद्यार्थियों द्वारा वक्ता के पेशे से संबंधित किसी नई शब्दावली के शिक्षण को सुदृढ़ कर सकते हैं? सुनिश्चित करें कि आपके विद्यार्थी बाद में अतिथि वक्ता को धन्यवाद पत्र लिख सकें।

विचार कीजिए

- अतिथि वक्ता के भ्रमण के परिणामस्वरूप किस प्रकार के शैक्षिक अवसर उत्पन्न हुए?
- भ्रमण के बाद आप अपने विद्यार्थियों के फीडबैक के लिए किस प्रकार की गतिविधियों का संचालन कर सकते हैं?

इस प्रकार के भ्रमण के बाद व्यक्तिगत या सामूहिक लेखन कार्य दे सकते हैं। आपके विद्यार्थी अपनी अभ्यास पुस्तिकाओं में भ्रमण के बारे में सचित्र वर्णन कर सकते हैं। वैकल्पिक रूप से, वे अपने कार्य के बारे में एकत्रित जानकारी के आधार पर, अतिथि वक्ता के 'जीवन का एक दिन' वर्णित कर सकते हैं। ऐसे आगंतुकों के मामले में जिन्होंने अतीत के जीवन पर बात की, विद्यार्थी वर्तमान के साथ उसकी तुलना करते हुए विवरणात्मक लेख लिख सकते हैं।

कक्षा में अतिथि वक्ता के विकल्प या अनुवर्तन के रूप में, उम्र में बड़े विद्यार्थियों को इलाक़े में साक्षात्कार के लिए समुदाय के सदस्यों को पहचानने, यदि उपलब्ध हो, तो मोबाइल फ़ोन या अन्य उपकरण पर इस प्रकार की आकस्मिक भेंट की ऑडियो रिकॉर्डिंग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। कई क़िस्म के पूरक व्यक्तियों के छोटे-सामूहिक साक्षात्कारों की श्रृंखला से उत्तर संयोजित करते हुए, आपके विद्यार्थी विभिन्न दृष्टिकोणों से स्थानीय मुद्दे पर विचार करते हुए कक्षा प्रॉजेक्ट संबंधी लेख लिख सकते हैं। आप किसी स्थानीय अख़बार से भी यह जानने के लिए संपर्क कर सकते हैं कि क्या वे विद्यार्थियों के कुछ इस प्रकार के कार्यों को प्रकाशित करने पर विचार करना चाहेंगे।

विद्यार्थी अभिनय द्वारा अतिथि के दौरों या साक्षात्कार का अनुवर्तन भी कर सकते हैं। जोड़े में काम करते हुए, एक व्यक्ति साक्षात्कारकर्ता की भूमिका निभा सकता है, और अन्य उस व्यक्ति का, जिसका साक्षात्कार लिया जा रहा हो। भूमिका अभिनय का मंचन बिना तैयारी के या पहले से लिख कर किया जा सकता है। यह सहपाठियों के लिए या स्कूल के अन्य कक्षाओं के लिए प्रदर्शित किए जा सकते हैं। जहाँ सुविधाएँहो तो फ़ोटो, ऑडियो रिकॉर्डिंग या वीडियो रिकॉर्डिंग इन विद्यार्थियों के प्रदर्शन को सुरक्षित करने का बेहतरीन तरीक़ा है।

भूमिका अभिनय पर अधिक जानकारी के लिए, प्रमुख संसाधन 'कहानी सुनाना, गाने, भूमिका अभिनय और नाटक' पढ़ें।

वीडियो: कहानी सुनाना, गाने, नाटिका और नाटक

विचार कीजिए

ऊपर प्रस्तावित अनुवर्ती गतिविधियों पर विचार करें।

- प्रत्येक के लिए, 'S', 'L', 'R' और 'W' शब्दों से संकेत दें कि क्या उनमें बोलना (speaking), सुनना (listening), पढ़ना या लिखना (reading या writing), इन कौशलों का संयोजन शामिल है।
- वे अन्य कौन-से कौशल शामिल करते हैं?

3 स्कूल के आस-पास स्थानीय संसाधन

आप स्कूल के आस-पास के परिवेश में कई भाषा और साक्षरता से संबंधित शिक्षण अवसर पा सकते हैं।

केस स्टडी 3: स्कूल की यात्रा

श्री माणिक, सिंगरौली के एक प्राथमिक स्कूल शिक्षक, चौथी और पाँचवी कक्षा को पढ़ाते हैं। यहाँ वे वर्णित करते हैं कि उन्होंने किस प्रकार अपनी कक्षा में बातचीत से संबंधित गतिविधि के आधार के रूप में अपने विद्यार्थियों की स्कूल यात्रा का उपयोग किया।

मैंने स्वयं अपनी स्कूल की नियमित यात्रा के बारे में विद्यार्थियों को बताते हुए विषय का परिचय करवाया। मैंने पिछली शाम को कुछ नोट्स तैयार किए और मैं क्या कहूँगा इसका अभ्यास किया, ताकि सुनिश्चित हो सके कि उसमें अनेक रोचक जानकारी शामिल हो। मैंने जहाँ तक संभव हो, भावाभिव्यक्ति के साथ बीच-बीच में रुकते हुए और यह देखते हुए कि विद्यार्थी मेरी बातों को समझ रहे हैं या नहीं, धीमे और स्पष्ट रूप से बात की।

मैंने उल्लेख किया कि मैं कहाँ से शुरुआत करता था? मैं घर से कितने बजे निकलता था, सामान्यतः सफ़र में कितना समय लगता था? उसमें किस प्रकार के परिवहन शामिल थे? मैं किन स्थल-चिह्न या लैंडमार्क को पार करता था? मुझे रास्ते में क्या आकर्षक लगता था? मैं किन्हें अक्सर देखा करता था? मैं आम तौर पर किनसे बातचीत करता था और अपनी बातचीत में मैं किस भाषा का प्रयोग करता था। मैंने अपनी यात्रा में विभिन्न प्रकार के परिवहन स्वरूपों के उपयोग और दृश्यों में परिवर्तन जैसे बदलते मौसम के प्रभाव के बारे में बातचीत करते हुए समापन किया।

मैंने विद्यार्थियों से स्कूल के उनके सफ़र के बारे में एक या दो बातें पूछते हुए इसका अनुवर्तन किया। फिर मैंने उनसे कहा कि उनमें से हरेक अगली सुबह अपने स्कूल के सफ़र पर विशेष रूप से ध्यान दें।

अगले दिन, मैंने कक्षा को चार के समूहों में व्यवस्थित किया और उनसे निम्नलिखित प्रश्नों का संकेतों के रूप में उपयोग करते हुए, अपने स्कूल की यात्रा के बारे में एक दूसरे को बताने के लिए कहा।

- आपकी यात्रा की शुरुआत कहाँ से हुई?
- आप किस परिवहन का उपयोग करते हैं?
- इस सफ़र में कितना समय लगता है? क्या मौसम पर निर्भर करते हुए ज़्यादा समय लग सकता है?
- रास्ते में आपकी पसंदीदा जगहें कौन-सी हैं?
- आप आम तौर पर क्या देखते हैं?
- आप किनसे बात करते हैं? आप उनसे बातचीत के लिए किस भाषा का उपयोग करते हैं?

चाहे मेरे विद्यार्थियों ने यह जानकारी अपनी मातृभाषा में साझा की या स्कूल की भाषा में, लेकिन सबके पास सुनाने के लिए बहुत कुछ था।

अंत में, एक कक्षा के रूप में, हमने जाना कि कितने विद्यार्थी सबसे दूर निवास करते हैं, उनमें से कितने लोगों ने ज़्यादा लोगों से बात की, और उनमें से कितने स्कूल के सफ़र के दौरान एक दूसरे से रास्ते में मिले।

विचार कीजिए

- श्री माणिक के विद्यार्थियों को किस प्रकार सामूहिक चर्चा में व्यवस्थित किया जा सकता है?
- चर्चा के बाद आप किस प्रकार की गतिविधियों को संचालित करने पर विचार कर सकते हैं?

समूहों को एकसमान जगहों पर रहने वाले, या साथ सफ़र करने वाले, या मिश्रित समूहों में व्यवस्थित किया जा सकता है।

सुझाई गई अनुवर्ती गतिविधियों में निम्न शामिल हो सकती हैं:

- विद्यार्थियों द्वारा अपने रास्ते में देखी गई किसी चीज़ का चित्र उतारना।
- अपनी यात्रा का सचित्र और व्याख्या सहित चित्र बनाना।
- अपनी यात्रा का विवरण लिखना।
- अपनी यात्रा के बारे में एक कविता लिखना।
- कक्षा में मौजूद विद्यार्थियों के स्कूली सफ़र के बीच अंतर और समानताओं का मूल्यांकन करते हुए वर्ग परियोजना पर काम करना

आप इस गतिविधि को कुछ सप्ताह या महीने बाद दुबारा संचालित कर सकते हैं और विद्यार्थियों से पूछ सकते हैं कि उनके सफ़र में क्या परिवर्तन आया है। हो सकता है कि सड़क में सुधार हुआ हो, नई इमारतों का निर्माण हुआ हो या जिन लोगों से वे मिलते हैं वे बदल गए हों। इसके अतिरिक्त, उदाहरण के लिए संभव है फसलें काटी गई हों, मौसम के कुछ फल दिख रहे हों या रास्ते का कोई हिस्सा बह गया हो।

4 सारांश

इस इकाई ने प्रदर्शित किया है कि किस प्रकार आसानी से उपलब्ध संसाधनों से सिखना आपके स्कूल पाठ्यपुस्तक में भाषा और साक्षरता गतिविधियों की पूर्ति करता है और उन्हें बढ़ावा देता है। क्या ऐसे संसाधनों में प्रिंट, बोलचाल या स्थानीय साधन शामिल हैं, क्या ये सभी आपके विद्यार्थियों को सुनने, बोलने, पढ़ने और सार्थक तरीक़े से लिखने को प्रेरित करने के अवसर प्रदान कर सकते हैं। समय के साथ अपनी कक्षाओं में उपयोग किए जाने वाले स्थानीय संसाधनों की मात्रा बढ़ाने से सुनिश्चित होगा कि आपके विद्यार्थी स्कूल के बाहर प्रामाणिक और सार्थक पाठ के साथ जुड़ते हैं।

संसाधन

संसाधन 1: स्थानीय संसाधनों का उपयोग

अध्यापन के लिए केवल पाठ्यपुस्तकों का ही नहीं – बल्कि अनेक शिक्षण संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है। यदि आप विभिन्न ज्ञानेंद्रियों (दृष्टि, श्रवण, स्पर्श, गंध, स्वाद) का उपयोग करने वाले तरीकों की पेशकश करते हैं, तो आप विद्यार्थियों के सीखने के विभिन्न तरीकों को आकर्षित करेंगे। आपके इर्दगिर्द ऐसे संसाधन उपलब्ध हैं जिनका उपयोग आप कक्षा में कर सकते हैं, और जिनसे आपके विद्यार्थियों की शिक्षण-प्रक्रिया को समर्थन मिल सकता है। कोई भी स्कूल शून्य या जरा सी लागत से अपने स्वयं के शिक्षण संसाधनों को उत्पन्न कर सकता है। इन सामग्रियों को स्थानीय ढंग से प्राप्त करके, पाठ्यक्रम औरे विद्यार्थियों के सीखने के बीच संबंध बनाए जाते हैं।

आपको अपने नजदीकी परिवेश में ऐसे लोग मिलेंगे जो विविध प्रकार के विषयों में पारंगत हैं; आपको कई प्रकार के प्राकृतिक संसाधन भी मिलेंगे। इससे आपको स्थानीय समाज के साथ संबंध जोड़ने, उसके महत्व को प्रदर्शित करने, विद्यार्थियों को उनके स्थानीय संसाधनों की प्रचुरता और विविधता को देखने के लिए प्रोत्साहित करने, और संभवत: सबसे महत्वपूर्ण रूप से, विद्यार्थियों के शिक्षण में समग्र दृष्टिकोण – यानी, स्कूल के भीतर और बाहर शिक्षा को अपनाने की ओर काम करने में सहायता मिल सकती है।

अपनी कक्षा का अधिकाधिक लाभ उठाना

लोग अपने घरों को यथासंभव आकर्षक बनाने के लिए कठिन मेहनत करते हैं। उस स्थानीय परिवेश के बारे में सोचना भी महत्वपूर्ण है जहाँ आप अपने विद्यार्थियों को शिक्षित करने की अपेक्षा करते हैं। आपकी कक्षा और स्कूल को पढ़ाई की एक आकर्षक जगह बनाने के लिए आप जो कुछ भी कर सकते हैं उसका आपके विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव होगा। अपनी कक्षा को रोचक और आकर्षक बनाने के लिए आप बहुत कुछ कर सकते हैं – उदाहरण के लिए, आप:

- पुरानी पत्रिकाओं और पुस्तिकाओं से पोस्टर बना सकते हैं।
- वर्तमान विषय से संबंधित वस्तुएँ और शिल्पकृतियाँ ला सकते हैं।
- अपने विद्यार्थियों के काम को प्रदर्शित कर सकते हैं।
- विद्यार्थियों को उत्सुक बनाए रखने और नई शिक्षण-प्रक्रिया को प्रेरित करने के लिए कक्षा में प्रदर्शित चीजों को बदल सकतें हैं।

अपनी कक्षा में स्थानीय विशेषज्ञों का उपयोग करना

यदि आप गणित में पैसे या परिमाणों पर काम कर रहे हैं, तो आप बाज़ार के व्यापारियों या दर्जियों को कक्षा में आमंत्रित कर सकते हैं और उन्हें यह समझाने को कह सकते हैं कि वे अपने काम में गणित का उपयोग कैसे करते हैं। वैकल्पिक रूप से, यदि आप कला विषय के अंतर्गत परिपाटियों और आकारों जैसे विषय पर काम कर रहे हैं, तो आप मेहंदी डिजाइनरों को स्कूल में बुला सकते हैं ताकि वे भिन्न-भिन्न आकारों, डिजाइनों, परम्पराओं और तकनीकों को समझा सकें। अतिथियों को आमंत्रित करना तब सबसे उपयोगी होता है जब शैक्षणिक लक्ष्यों के साथ संबंध हर एक व्यक्ति को स्पष्ट होता है और सामयिकता की साझा अपेक्षाएं मौजूद होती हैं।

आपके पास स्कूल समुदाय में विशेषज्ञ उपलब्ध हो सकते हैं जैसे (रसोइया या देखभालकर्ता) जिन्हें विद्यार्थियों द्वारा अपने शिक्षण के संबंध में प्रतिबिंबित किया जा सकता है अथवा वे उनके साथ साक्षात्कार कर सकते हैं; उदाहरण के लिए, खाना बनाने में इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुओ की मात्राओं का पता लगाने के लिए, या स्कूल के मैदान या भवनों पर मौसम संबंधी स्थितियों का कैसे प्रभाव पड़ता है।

बाह्य पर्यावरण का उपयोग करना

आपकी कक्षा के बाहर ऐसे अनेक संसाधन उपलब्ध हैं, जिनका प्रयोग आप अपने पाठों में कर सकते हैं। आप पत्तों, पौधों, कीटों, पत्थरों या लकड़ी जैसी वस्तुओं को एकत्रित कर सकते हैं (या अपनी कक्षा से एकत्रित करने को कह सकते हैं)। इन संसाधनों को अंदर लाने से कक्षा में रूचिकर प्रदर्शन तैयार किए जा सकते हैं जिनका संदर्भ पाठों में किया जा सकता है। इनसे चर्चा या प्रयोग आदि करने के लिए वस्तुएं प्राप्त हो सकती हैं जैसे वर्गीकरण से संबंधित गतिविधि, या सजीव निर्जीव वस्तुएँ। बस की समय सारणियों या विज्ञापनों जैसे संसाधन भी आसानी से उपलब्ध हो सकते हैं जो आपके स्थानीय समुदाय के लिए प्रासंगिक हो सकते हैं – इन्हें शब्दों को पहचानने, गुणों की तुलना करने या यात्रा के समयों की गणना करने के कार्य निर्धारित करके शिक्षा के संसाधनों में बदला जा सकता है।

कक्षा में बाहर से वस्तुएं लाई जा सकती हैं- लेकिन बाहरी स्थान भी आपकी कक्षा का विस्तार हो सकते हैं। आम तौर पर सभी विद्यार्थियों के लिए चलने-फिरने और अधिक आसानी से देखने के लिए बाहर अधिक जगह होती है। जब आप सीखने के लिए अपनी कक्षा को बाहर ले जाते हैं, तो वे निम्नलिखित गतिविधियो को कर सकते हैं:

- दूरियों का अनुमान करना और उन्हें मापना।
- यह दर्शाना कि घेरे पर हर बिन्दु केन्द्रीय बिन्दु से समान दूरी पर होता है।

- दिन के भिन्न समयों पर परछाइयों की लंबाई रिकार्ड करना।
- संकेतों और निर्देशों को पढ़ना।
- साक्षात्कार और सर्वेक्षण आयोजित करना।
- सौर पैनलों की खोज करना।
- फसल की वृद्धि और वर्षा की निगरानी करना।

बाहर, उनका शिक्षण वास्तविकताओं तथा उनके स्वयं के अनुभवों पर आधारित होता है, तथा शायद अन्य संदर्भों में अधिक लागू हो सकता है।

यदि आपके बाहर के काम में स्कूल के परिसर को छोड़ना शामिल हो तो, जाने से पहले आपको स्कूल के मुख्याध्यापक की अनुमति लेनी चाहिए, समय सारणी बनानी चाहिए, सुरक्षा की जाँच करनी चाहिए और विद्यार्थियों को नियम स्पष्ट करने चाहिए। इससे पहले कि आप बाहर जाएं, आपको और आपके विद्यार्थियों को यह बात स्पष्ट रूप से पता होनी चाहिए कि किस संबंध में जानकारी प्राप्त की जाएगी।

संसाधनों का अनुकूलन करना

चाहें तो आप मौजूदा संसाधनों को अपने विद्यार्थियों के लिए कहीं अधिक उपयुक्त बनाने हेतु उन्हें अनुकूलित कर सकते हैं। ये परिवर्तन छोटे से हो सकते हैं किंतु बड़ा अंतर ला सकते हैं, विशेष तौर पर यदि आप शिक्षण को कक्षा के सभी विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक बनाने का प्रयास कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, आप स्थान और लोगों के नाम बदल सकते हैं यदि वे दूसरे राज्य से संबंधित है, या गाने में व्यक्ति के लिंग को बदल सकते हैं, या कहानी में शारीरिक रूप से अक्षम बच्चे को शामिल कर सकते हैं। इस तरह से आप संसाधनों को अधिक समावेशी और अपनी कक्षा और उनकी शिक्षण-प्रक्रिया के उपयुक्त बना सकते हैं।

साधन संपन्न होने के लिए अपने सहकर्मियों के साथ काम करें; संसाधनों को विकसित करने और उन्हे अनुकूलित करने के लिए आपके बीच ही आपको कई कुशल व्यक्ति मिल जाएंगे। एक सहकर्मी के पास संगीत, जबकि दूसरे के पास कठपुतलियाँ बनाने या कक्षा के बाहर के विज्ञान को नियोजित करने के कौशल हो सकते हैं। आप अपनी कक्षा में जिन संसाधनों को उपयोग करते हैं उन्हें अपने सहकर्मियों के साथ साझा कर सकते हैं ताकि अपने स्कूल के सभी क्षेत्रों में एक प्रचुर शिक्षण पर्यावरण बनाने में आप सबकी सहायता हो सके।

अतिरिक्त संसाधन

- Gillis, C. (1991) *The Community as Classroom: Integrating School and Community Through Language Arts*. Portsmouth, NH: Boynton/Cook. This activity-filled book suggests ways that students can develop their language skills through community-based learning experiences.
- Kenner, C. (2000) *Home Pages: Literacy Links for Bilingual Children*. London: Trentham Books.
- National Council of Teachers in English (NCTE) (undated) 'Supporting linguistically and culturally diverse learners in English education' (online). Available from: http://www.ncte.org/cee/positions/diverselearnersinee.
- Prior, J. and Gerard, M.R. (2004) *Environmental Print in the Classroom: Meaningful Connections for Learning to Read*. Newark, DE: International Reading Association.
- Siegel, M. (2006) 'Rereading the signs: multimodal transformations in the field of literacy education', *Language Arts*, vol. 84, no. 1, pp. 65–77.
- Luis Moll, et al., "Funds of knowledge for teaching: Using a qualitative approach to connect homes and families,' Theory into Practice
- Moll, L.C., Amanti, C., Neff, D. and Gonzalez, N. (1992). 'Funds of knowledge for teaching: using a qualitative approach to connect homes and classrooms', *Theory into Practice*, no. 31, pp. 132–41.
- Azim Premji Foundation's research studies: http://www.azimpremjifoundation.org/Research_Studies

संदर्भ / संदर्भग्रंथ सूची

Center for Ecoliteracy (undated) 'Teach: place-based learning' (online). Available from: http://www.ecoliteracy.org/strategies/place-based-learning (accessed 18 November 2014).

Promise of Place (undated) 'Research & evaluation' (online). Available from: http://www.promiseofplace.org/Research_Evaluation (accessed 18 November 2014).

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस यूनिट में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतापूर्ण आभार:

चित्र 1: http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/ के अधीन Flickr में उपलब्ध विभिन्न तस्वीरें। (Figure 1: various images made available in Flickr under http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/.)

चित्र 2: [Figure 2:] https://creativecommons.org/licenses/by-sa/2.0/deed.en_GB के अधीन Flickr में उपलब्ध © Peter Grima.(© Peter Grima in Flickr made available under https://creativecommons.org/licenses/by-sa/2.0/deed.en_GB.)

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।